वेद सोच

- एक दृष्टिपथ

- कवयित्री -

भारती यादव

परिचय

भारती सुरेश यादव, नियति की चुनौती का स्वीकार कर अपनी एक नई पहचान बनाने के लिये निरंतर संघर्ष करते हुए उसकी सही पहचान बनानेवाली युवती।

विद्यालय में वक्तृत्व, वाद-विवाद स्पर्धाओं में सबसे आगे रहनेंवाली और किताबें पढ़ने का शौक रखनेवाली भारती को १५ वर्ष की आयु में Retinitis pigmentosa की समस्या प्रारंभ हुई, और आँख की रोशनी धीरे-धीरे जाती रही, यहाँ तक की बी.ए. प्रथम वर्ष की परीक्षा देना असंभव हो गया। निराशा और अंधकार से भरे करीब ३ वर्ष के कालखंड के बाद, संगीत के रूप में एक आशा की किरण आई। भारती ने श्री. अकील अहमद सर के मार्गदर्शन में संगीत सीखना प्रारंभ किया। मन को थोड़ा सुकून मिला, दोस्त मिले। अकील सर ने संगीत के साथ साथ जिंदगी जीने का सकारात्मक विचार और आगे बढने का हौसला दिया।

भारती का खोया हुआ आत्मविश्वास वापस आने पर वर्ष २०१७ में उसने एल.ए.डी. कॉलेज में बी.ए. के लिये प्रवेश लिया और कुशाग्र बुद्धी का परिचय देते हुए श्रवण माध्यम से पढ़ाई करते हुये वर्ष २०२० में बी.ए. पदवी हासिल की। अपना बचपन का सपना पूरा करने के लिये प्रवेश परीक्षा के माध्यम से डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर महाविद्यालय में एल.एल.बी. के लिये प्रवेश लिया। वर्ष २०२३ में कानून की डिग्री पाने के पश्चात अब भारती के दृष्टि पथ में क्रिमिनोलॉजी का विशेष अभ्यास कर क्रिमिनल लॉयर बनने का लक्ष्य है।

आज भी भारती विविध वक्तृत्व स्पर्धा और वाद-विवाद स्पर्धाओं में सहभाग लेती है और उसने राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार प्राप्त किये है।

भारती का शब्दों के साथ मन का रिश्ता और लगाव हैं और उन्हें कविता में ढ़ालने का एक अनोखा अंदाज भी है।

आज भारती ने साहित्य विश्व में अपनी एक विशेष पहचान बनाई हैं। अनेक काव्य प्रस्तुति मंच पर उसे कविता प्रस्तुति के लिये आमंत्रित किया जाता है। उसका प्रेरणादायी व्यक्तित्व अपने मन की ज्योति से औरों को भी प्रेरित करता है।

वेद सोच

- एक दृष्टिपथ

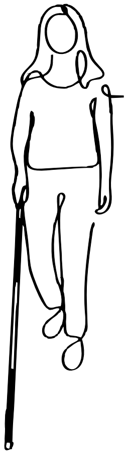

– कवयित्री –

भारती यादव

'आशादीप'

अपंग, महिला–बाल विकास संस्था, नागपूर

नोंदणी क्र. 413/93 दि. 3.7.1993

विदर्भ संशोधन मंडळ परिसर, प्लॉट नं. 1, सिव्हील लाईन्स, नागपूर-440 001

वेद सोच – एक दृष्टिपथ

प्रकाशक
स्क्वेअर कम्युनिकेशन्स ॲन्ड क्रिएटीव्हज
नागपुर - ४४० ०१५
चलभाष : ९८८१४ ७९५८९

प्रथमावृत्ति - २४ मार्च २०२३

© **आशादीप - अपंग, महिला-बाल विकास संस्था**
विदर्भ संशोधन मंडळ परिसर,
प्लॉट नं. १, सिव्हिल लाईन्स,
पश्चिम हायकोर्ट रोड, नागपूर - ४४० ००१
चलभाष - ९८२३३ ६२१६१, ९४२१२ १२४४८
ई-मेल : pnslit@yahoo.com
वेब साइट : www.ashadeepsanstha.org.in
यु-ट्युब चैनल : ashadeepsanstha

मुखपृष्ठ :
प्रशांत कावळे
स्क्वेअर कम्युनिकेशन्स ॲन्ड क्रिएटीव्हज
नागपुर - ४४० ०१५
चलभाष : ९८८१४ ७९५८९

टाईप सेटींग :
कल्याणी काम्प्युटर्स ॲन्ड प्रिंटर्स
अत्रे लेआऊट, नागपुर - ४४० ०२५

अनुदान मूल्य : २५०/- रुपये

अर्पणपत्रिका

सरस्वती नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणी
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ।

माँ सरस्वती आपके चरणों में

सविनय अर्पण ।

प्रस्तावना

अपंग, महिला–बाल विकास संस्था द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिन के अवसर पर भारती यादव की कविताओं का संकलन – 'वेद सोच – एक दृष्टिपथ' आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें विशेष हर्ष है। आशादीप दिव्यांग प्रेरणा केंद्र के माध्यम से यह संस्था दिव्यांगो की विशेष क्षमताओं को पहचान कर उन्हे बढावा देती है। दिव्यांग स्नेही समाज निर्मिती के लिये दिव्यांगो का समाज में स्वीकार, समावेश और सक्षमीकरण के हेतू संस्था कटिबध्द है।

दृष्टिबाधित, परंतु मन की आँखो से दुनिया को समझते हूये अपने भाव भावनाओं को काव्यात्मक अभिव्यक्ती देनेवाली भारती की आवाज अधिक से अधिक वाचकों तक पहुँच पाये, इसलिये हमने इस पुस्तिका का ई–संस्करण प्रकाशित किया हैं। अत: आप सभी से विनती हैं की आप इस पुस्तिका को ज्यादा से ज्यादा लोगो तक पहुँचायें। इसी तरह दृष्टिबाधित व्यक्तियों तक ये कविताएं पहुँच सकें इस उद्देश से इस पुस्तिका की ऑडीओ लिंक भी बनाई गई है।

पुस्तिका प्रकाशन के विचार को मूर्त रूप में लाते समय संकलक तथा संपादक मंडल के तत्पर सहकार्य का मैं विशेष उल्लेख करना चाहुंगी। साथ ही मुखपृष्ठ डिझाइनिंग तथा मुद्रण के साथ पुस्तिका को आकर्षक रूप में प्रस्तुत करने के लिये कल्याणी कॉम्प्युटर्स तथा स्क्वेअर कम्युनिकेशन्स ॲन्ड क्रिएटिव्हज के श्री प्रशांत कावळे तथा उनके सहकारियोंको भी मै धन्यवाद देना चाहती हूँ।

हिंदी की प्रथितयश लेखिका डॉ. भारती सुदामे द्वारा भेजे हुए शुभ संदेश एवम् आशीर्वाद के लिये मै उन्हें धन्यवाद देती हूँ।

हिंदी की शिक्षिका तथा लेखिका श्रीमती ज्योती ठाकूर द्वारा इस पुस्तिका पर अभिप्राय तथा उपयुक्त सूचनाओं के लिये मैं उनकी विशेष आभारी हूँ।

नागपूर
दिनांक : २४ मार्च २०२३

डॉ. प्रतिमा शास्त्री
अध्यक्ष,
अपंग–महिला, बाल विकास संस्था

संपादकीय

दिव्यांग किसी भी समाज के ऐसें घटक हैं जिन्हे जीवनयापन के लिये अनेक कठिनाईयोंका सामना करना पडता है. और उसमे भी अगर दृष्टिबाधित हों तो दैंनदिन जीवन में किसी न किसी पर निर्भर रहना पडता है और साथ में ही बहुत मुश्किलोंसे गुजरना पडता है। उसके बावजूद संघर्ष पर खरे उतरकर अपने आप को साबित करने का हौसला रखने वाले ऊँची उड़ान भर सकते हैं। इसी का उदाहरण है हमारी प्यारी सखी भारती। आशादीप से जुड़ते ही भारती का अनोखापन सबको भाने लगा। उसकी सोच, उसके विचार उसकी पहचान बन रहे थे। उसकी निराशाजनक अंधेरी दुनियासे बाहर आने के लिए संगीत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारती लेट ब्लाइंडनेस की केस है, जिसने सारी दुनिया कि खूबसूरती अपने आँखोंसे देखी थी.... रोशनी की जगमगाहट धीरे धीरे कम हो जाना .... जीवन में अंधेरा छा जाना... ऐसी हालत में अपने जीवन को सकारात्मक सोच से अपने सपनोंकी पूर्ती कें लिये फिर से डटकर खडे हो उठना एक नई मिसाल स्थापित कर जाता है.... जीवन में कभी हार नहीं माननी चाहिये । भारती की यह सोच हमारे समाज मे प्रेरणा का कार्य करेगी; इसी हेतू से उसकी कविताओंकी पुस्तक सबके समक्ष लाने की हमारी मनीषा थी।

अपने शब्दों का, एहसासों के साथ कदम मिलाकर चलने की भारती की आदत ने उसे पटर पटर नाम दिया, तो उसे भी यह नाम पसंद आने लगा... उसने इस बात को भी सकारात्मक लेते हुए अपने आप को और अधिक मजबूत बनाया। उसकी पटर पटर कभी भी बेवजह नहीं होती है, उसमें निश्चितही एक सोच होती हैं। अपने शब्दों के बंदिश को पटर पटर रूप में कैसे बोल पाई यह उसने अपनी वेद सोच कविता में बहुत ही खूबसूरती से पेश किया है। धीरे धीरे उत्स्फूर्त कविता करना उसका शौक बन गया। जीवन के हर पहलू पर प्रकाश डालनेवाली उसकी कविताएं मन को छू जाती हैं। उसकी एक एक कविता अनमोल मोती है जो जीवन दर्शन सिखाती हैं। जहाँ वे एक ओर दर्दभरी हैं वही दूसरी ओर उसके आत्मविश्वास को दर्शाती हैं। उसके संवेदनशील मन को उजागर करती हैं। शब्द ही उसकी दुनिया हैं, अंतर्मन की आवाज है ।

भारती की कविता भाषिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजकीय संस्कारोंको दर्शाती हैं । उसकी सोच, उसका संवेदनशील मन कविता बनकर सामने आता है । उसकी तर्कदृष्टि और बौद्धिक क्षमता वाकई तारिफ ऐ काबिल है ।

शिक्षकों के प्रति उसे नितांत आदर और कृतज्ञता है, जो 'गुरु की शिक्षा', 'पावन रिश्ता' ऐसी कविताओं में उभर कर आया है। भारती का अपने माँ, बाबूजी के प्रति लगाव और प्रेम, 'माँ की ममता', 'बाबुल कि बेटी', 'माँ ने मुझे क्या दिया' इन कविताओं में झलकता है ।

'नदिया बहती है', 'आसमान' इ. कविताएं प्रकृति से स्नेह दर्शाते हुए उनसे कुछ सीखने की प्रेरणा देती हैं । हर एक कविता में उसका नजरिया अलग है, चाहे वो राजनीति हो, संविधान हो या राष्ट्र के प्रति भक्ति हो, उसकी सोच देखते ही बनती हैं । 'सपने', 'आईना', 'अपाहिज', 'याद' जैसी कविताएं एहसास दिलाती है कि मन के चक्षु खुले हों तो बाह्यचक्षु का कोई मायना नही रहता और यही बात 'सबसे प्यारी मेरी आँखे' कविता में उसने व्यक्त की है। यद्यपि दृष्टि नही रही लेकिन मन की ज्योति तो है ही। एक बहुत सुंदर कविता 'जीवन की गाड़ी चलती जाती' में चाहे सुख हो या दुख आगे बढ़ते ही जाना है, यह संदेश दिया है । जहां लुई ब्रेल के प्रति अपनी श्रद्धा, कृतज्ञता प्रकट की है वहीं सफेद छड़ी को अपना दोस्त बतलाया है। ऐसी सुंदर कविताओं की रचना करनेवाली भारती को आशादीप परिवार की ओर से स्नेहभरी शुभकामनाएं और बधाई !

डॉ. जयश्री पंढरपूरकर **अपर्णा कुळकर्णी**

संकलक संपादक मंडल

डॉ. प्रतिमा शास्त्री

डॉ. जयश्री पंढरपूरकर **अपर्णा कुळकर्णी**
छाया तारे **अंजली जोशी**
डॉ. निवेदिता कुळकर्णी **रेखा पारखी**
डॉ. अनघा नासेरी **वर्षा आठवले**

ऑडिओबुक संकलन : डॉ. प्रतिमा शास्त्री

https://drive.google.com/drive/folders/1JUX1ArVaXnp3FDtT_8yrEt11R5DPtEkj?usp=share_link

मनोगत

मैं भारती यादव एल.एल.बी. अंतिम वर्ष की विद्यार्थिनी हूँ। लेकिन शब्दों की दुनिया में मेरे शिक्षक ने मेरा नाम पटर पटर रखा । उस दिन दिमाग में एक सोच उभरी की यह नाम सबसे अलग है । फिर सोच ने गति पकड़ी, मुझे पता चला कि पटर पटर का मतलब मेरे दिमाग में चलने वाली निरंतर सोच से था, जो त्वरित कविता में ढलकर आती और मैं तुरंत कविता रचती हूँ ।

हाथ में ना काग़ज कलम कभी ली, ना ही उन चीजों को सोचने के लिये मैने कोई वक्त लिया । वह कविता तुरंत दिमाग में उभरी और तुरंत एक सोच का रूप कविता ने लिया । मेरी कविताएँ तुरंत बनती गई और इसीलिये मेरा नाम पटर–पटर रख दिया गया ।

लेकिन आखिर मुझे पटर–पटर बनानेवाला माहौल कौनसा था? अंधकार भरी दुनिया में जब मैने कदम बढ़ाया तो उस समय अंधेरे को पार करना मेरे लिये अत्यंत कठिन था । उस समय एहसास हुआ कि वह संगीत का माहौल था, जो मुझे ख़ुशी देता है, शास्त्रीय संगीत के स्वर, दिमाग की परेशानियों से निकालकर इन्सान को खुश रहना सिखाते हैं और जब तक इन्सान खुश नही रहेगा, वह कविता की रचना कैसे करेगा? वो शब्दों में खुश कैसे रह पायेगा? कविताओं का मतलब सिर्फ सुख और दुख ही नहीं, हर पहलुओं का अनुभव करके उन्हे कविताओं में ढालना होता है । मैने यह अनुभव किया कि संगीत का माहौल, मुझे ख़ुश रहना सिखा रहा था । भविष्य की चिंताएँ नही, तो भविष्य को मजबूत करना सिखा रहा था । तभी तो मैं सोच को कविताओं में ढाल पाई ।

मेरी कविताओं का श्रेय संगीत को है । मैं कभी कभी सोचती, कि मैं गायिका नहीं बन पाई, मैं तो शब्दों कि सोच बनी । मैं हर गीत सुनकर उन भावनाओं को कविता की रचना में बाँध पाई तब ऐसा लगा, कि मैं गीतों की बंदिश में नहीं, शब्दों की बंदिश में बँधी, जिसका माध्यम संगीत था ।

शिक्षक मुझे जो पढ़ाते और जिन शब्दों से हिम्मत और हौसला बढ़ाते वही शब्द मेरे लिये एक प्रेरणा बनी और मैं उन्हे कविताओं में ढाल पाई। इन्सान की सोच जब तक कोई वातावरण में घुल मिल ना जाये तो कविता नहीं रचती, इसी तरह अगर संगीत का वातावरण मुझे ना मिलता तो मैं अपनी कविताओं को नहीं बोल पाती । संगीत को सुनकर मैने खुश रहना सीखा । भविष्य की चिंताएँ छोड़कर वर्तमान मे मेहनत कर आगे बढना मैने सीखा । कविताओं के माध्यम से अपनी सोच आप सबके समक्ष रख पाई और इसी माध्यम से कुछ प्रेरणा आपको दे पाई।

मेरे संगीत के गुरू श्री अकील अहमद सर ने मुझे अंधेरी दुनिया से बाहर निकलने की प्रेरणा दी । उन्होंने मुझे बताया की किस तरह हमें भविष्य की चिंता नहीं करनी चाहिये, बल्कि अपने वर्तमान को सुधारते हुये, वर्तमान के ज्ञान के दम पर हम रौशनी तक बढ़ सके ।

आदरणीय क्षिप्रा सरकार मैडम, जो मेरे नजरों मे साक्षात सरस्वती है, उन्होंने भी क्लासिकल संगीत के साथ अच्छी हिंमत दी और हौसला बढ़ाया ।

ये दोनों गुरू मेरे लिये प्रेरणास्त्रोत हैं ।

आशादीप संस्था से मैं जब जुडी, तो डॉ. प्रतिमा शास्त्री मैडम, अपर्णा मैडम और संस्था के सभी सदस्य मेरे लिये प्रेरणा बने, एक जुनून बने । शास्त्री मैडम शक्ति के रूप दिखाई देती । अपर्णा मैडम से भी बहुत कुछ सीखा । मेरे दोस्त मेरे शिक्षक बने, आसपास के संगीत के वातावरण से मुझे जीवन की नई प्रेरणा मिली । मैं इनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ और दिल की गहराई से धन्यवाद देना चाहती हूँ ।

– भारती सुरेश यादव

शुभ संदेश

प्यारी बहन भारती,

बहुत बहुत आशीष।

तुम्हारी कविताएँ सुनी । बहुत आनंद आया । शब्दों की धाराओं में बहती तुम्हारे मन की ही नहीं अपितु हृदय की भी भावनाएँ अंदर तक झिंझोड गई । एक बेटी को तुमने जिस कदर उजागर किया है उसकी कोई तोड नहीं ।

भाषा, विन्यास और रचनाकौशल/अनुपमेय है ही, विचार भी गहराई से आये है । बहुत सुन्दर अभिव्यक्ती । किस कदर प्रशंसा करूँ, शब्द नहीं हैं मेरे पास! इतनाही कहूंगी –

जुग जुग जिओ, लिखती रहो, गाती रहो,

सबको कविताएं सुनाती रहो ।

ईश्वर तुम्हें बड़ी लंबी उम्र दे, सारी खुशी दे । जीवन में आगे बढ़ो, खुष रहो । ईश्वर तुम्हें हर उस बात में कामयाबी दे यही हृदय से मेरी चाहत है ।

नागपूर **डॉ. भारती सुदामे**

दिनांक : २४ मार्च २०२३

अभिप्राय

मैं, ज्योति हीरालाल ठाकुर कुमारी भारती यादव की कविताओं को पढ़ने के बाद उनके विषय में व उनकी कविता के विषय में अपने कुछ विचार प्रस्तुत करना चाहती हूँ।

कुमारी भारती के कविताओं का वाचन करते समय मेरी आँखों के सामने एक चलचित्र सा चल रहा महसूस होता है; साथ ही शरीर पर रौंगटे खडे.हो जाते है।

बेटा–बेटी, गुरु–शिष्य का अनोखा व पवित्र रिश्ता, फिर सपना देखना, सपने में कभी डॉक्टर तो कभी शिक्षक बनना काफी सराहनीय है।

किसी अनजान व्यक्ति को यह कविता–संग्रह पढ़ने के लिये दिया जाये, तो वह ये मानना तो दूर, सोच भी नहीं सकेगा कि यह किसी दिव्यांग कवयित्री की रचना है।

यह तारीफ नही बल्कि एक कडवी सच्चाई है। विचार, साहस और आत्मा को झकझोर कर रखने की जो क्षमता इनमें है, उसे मानना पडेगा।

मैं भी कभी–कभी छोटी–छोटी कविताएँ रचती हूँ, किंतु इन कविताओं मे भावना को प्रकट करने के लिये जिस गहराई से शब्दों का चयन किया है; वो शायद मैं भी नहीं कर पाई हूँ। सच कहूँ तो मैं इनकी कविता की कायल और इनकी प्रशंसक बन गई हूँ।

मै कवयित्री भारती जी को भविष्य में उनके सपने कठोर कठिनाइयों का साहस व हिम्मत से पूर्ण करने की शुभेच्छा देती हुं। भारती जी भविष्य मे एक सफल 'अपराधिक अधिवक्ता' बनकर हमारी नारियों को और समाज को सुरक्षा प्रदान करेगी, साथ ही अपनी दिल को छू लेनेवाली कविताओं का भी आस्वादन करवाएगी; ऐसी कामना करती हूँ।

धन्यवाद !

ढेर– सारी शुभकामनाओं के साथ.....

ज्योति हीरालाल ठाकुर

नागपूर
दिनांक : २४ मार्च २०२३

अनुक्रमणिका

क्र.	नाव	पान
१.	वेद सोच	१
२.	गुरू की शिक्षा	२
३.	पावन रिश्ता	२
४.	गुरू का ज्ञान	३
५.	माँ ने मुझे क्या दिया?	४
६.	बाबुल की बेटी	६
७.	जिंदगी का क्या भरोसा ?	७
८.	जीवन की गाड़ी चलती जाती...	८
९.	माँ की ममता	१०
१०.	आईना – एक हकीकत	११
११.	मेरा बचपन	१२
१२.	सबसे प्यारी मेरी आँखें	१३
१३.	ब्रेल लिपि	१४
१४.	आवाज का महत्त्व	१५
१५.	रिश्ता क्या हैं खून का	१६
१६.	मन की व्यथा	१७
१७.	क्यों बनी मैं बेटी?	१८
१८.	आसमान	२०
१९.	राजनीति का दौर चला	२२
२०.	संविधान	२४
२१.	बेटा और बेटी	२५
२२.	आत्मा मेरी भटक रही है	२६

अनुक्रमणिका

क्र.	नाव	पान
२३.	इंसान के दो रूप	२८
२४.	किन्नर	२९
२५.	मेरी दोस्त सफेद छड़ी	३०
२६.	अपाहिज	३१
२७.	नदी सीख दिलाती है	३२
२८.	मन की डोरी से रिश्तों में बाँधा	३३
२९.	कोरोना का आतंक	३४
३०.	आशादीप	३५
३१.	परदेसी गए परदेस	३६
३२.	ना मैं भगवन सर का ताज तेरे	३७
३३.	क्यों न लगे मुझे सपने अपने?	३८
३४.	बेटी	४०
३५.	यादें	४१
३६.	शब्द	४१
३७.	गुण स्वभाव संस्कार	४२
३८.	बदतमीज	४२
३९.	वीर शहीद जवान	४३
४०.	भारत माँ की मैं बेटी 'भारती'	४४

वेद सोच

ज्ञान का प्रकाश जो दे जाये,
उसे सरस्वती कहते हैं;
ओर उसी ज्ञान से जो शब्दोंकी रचना घडे,
उसे वेद सोच ही कहते हैं ।

इन शब्दो की वेद सोच को
मैं शब्दों के बंदिश मे घड़ पायी थी;
अपनी कविताओं को नए रुप में
शब्दोंके माध्यम से अनुभव करके ही तो,
पटर-पटर रुप मे मैं बोल पायी थी ।

इन्ही शब्दोंने मुझको जानो नया एहसास कराया था,
हर अनुभव को ज्ञान के जरिये हासिल करके ही मैने
शब्दों की रचना मे बाँधा था;
इसीलिये तो इन शब्दों की पक्तियों को वेद सोच ही कहते हैं ।
शिक्षक ने दिया जो ज्ञान उसी ज्ञान को ही तो वेद सोच कहते हैं ।

सरस्वती के माध्यम से देखो घर-घर में शिक्षक आ गये,
ज्ञान की रौशनी देकर हमको एक नयी ज्ञान की किरण बना गये;
इन शब्दों की वर्णमाला को मैं नाम 'वेद सोच' दे जाती हूँ,
अपने कविताओं के पंक्तियों को मैं वेद शब्द के आँखो से
लिखकर ही तो नई प्रेरणा लेकर आती हूँ ।

गुरू की शिक्षा

नारियल ऊपर से सख्त, अंदरसे कोमल होता है,
गुरूका स्वभाव भी नारियल की भाँति होता है ।
ऊपरी स्वभाव गुरूका देखा, मन में डर वो बन गया,
प्रश्न हमेशा होठोंपर प्रश्न बन कर रह गए ।
अंतर्मन में जब गुरू को टटोला, बड़ाही कोमल निकला,
उसी क्षण मुझको मेरे प्रश्नों के सारे उत्तर मिल गए ।
नारियल ऊपर से सख्त अंदरसे कोमल होता है,
गुरू का स्वभाव भी नारियल की भाँति होता है ।

पावन रिश्ता

खून का न कोई रिश्ता था,
ना रिश्तों का कोई नाम था।
गुरु शिष्य का रिश्ता,
हर रिश्ते से कितना पावन था।
होकर कमजोर अगर मै हार जाऊँ तो,
मेरे गुरु हौसला बढ़ाते थे।
पिता और भाई बनकर,
हरदम मुझे समझाते थे।
जीवन में सुख की कलियाँ बाँटी,
दुख के काँटे हरनेवाले गुरु ही तो मेरे थे।
मन की खूबसूरती उनकी आवाज बयाँ करती,
मन कभी पछताता, काश! मैं देख सकती।
यादें मैंने माँगी जब खुशियाँ भरी,
काश! उन यादों में मैं देख सकती ।
अपने शिक्षक को मैं देख सकती ।

गुरू का ज्ञान

सूरज के रूप में जब देखूँ गुरू को, मेरी आँखें झुलसती जाती है ।
चांद के रूप में जब शीश झुकाकर नमन करूँ,
तो मेरी अहमियत मेरे नजरो मे बढ़ जाती है ।

गुरू का ज्ञान सागर से गहरा, उसकी सीमा कोई नाप ना पाता हैं;
शिष्य कर ले कितनी भी तरक्की, पर गुरू से कभी
बड़ा ना हो पाता है ।

शिष्य का वजूद गुरू से होता, ना गुरू का शिष्य से होता हैं;
शिष्य को बनाता है गुरू हमेशा, ना गुरू को शिष्य बनाता है ।

गुरू के चरणों को स्पर्श करके ही तो शिष्य आगे बढ़ता जाता है;
उनके चरणो के आशीर्वाद से ही तो गुरू और
शिष्य का रिश्ता हरदम सफल हो पाता है ।

गुरू के चरणों को स्पर्श करके ही तो इंसान तरक्की पाता है;
उसी ज्ञान को अनुभव करके ही तो वह तरक्की की
सीढ़ी चढ़ता जाता है।

ऐसा लगता जानो शिष्य को, चरणों की मैं धूल गुरूवर,
चरणों की मैं धूल गुरूवर, चरणों मे आपके रहने दो;
अपनी कृपा दृष्टि, हर शिष्य पर गुरूवर रहने दो,
हर शिष्य पर गुरूवर रहने दो ।

माँ ने मुझे क्या दिया ?

सब मुझसे प्रश्न ये करते हैं कि क्या दिया तुझे तेरी मां ने?
तब मैं प्रश्नों का उत्तर देती और कहती,
नौ महीने गर्भ में पाला, सारी पीड़ा सहकर
जन्म दिया मुझे मेरी माँ ने ।

अच्छे-बुरे की पहचान कराई,
सभ्यता, सादगी का एहसास कराया मुझे मेरी माँ ने,
गुण, स्वभाव और संस्कार की परिभाषा का
पहला पाठ पढ़ाया मेरी माँ ने ।

पहली सीढ़ी बनी मेरी माँ,
जिसने सभ्यता और इन्सानियत का पाठ मुझे पढ़ाया ।
हर सीढ़ी पर चढ़ना मेरी माँ ने मुझे सिखाया

इस दुनिया में अच्छे बुरे की पहचान मुझे मेरी माँ कराती है,
मुसीबत में मुझे अपने शब्दों से मेरी माँ बचाती है.

माँ ही थी, जिसने सभ्य और अच्छा इन्सान मुझे बनाया था,
गुरु की शिक्षा का महत्व मेरी माँ ने ही मुझे
ज्ञान का प्रथम गुरु बनकर दिलाया था ।

ज्ञान की रौशनी क्या होती है
अनुभव मैंने मेरी माँ से पाया था.
ममता की शीतल छाया क्या होती है?
ये एहसास भी मैंने मेरी माँ से ही पाया था ।

सारी तकलीफें खुद वो सहती,
सारी कठिनाईयों का सामना करके
वो हर मुसीबत से मुझे बचाती थी ।
अच्छी प्यारी-सारी बातें, कहानी बता बताकर
मेरी माँ ही मुझे समझाती थी ।

गुण संस्कार की मूरत वो,
सरस्वती के रूप में कभी वो लगती है;
कभी जानो तो मुझे शीतल आसमान की छाया लगती ।
तो कभी गुस्से में, सीख दिलानेवाली शिक्षक लगती ।

मेरी माँ ने मुझे भारत माँ का पाठ पढ़ाया था,
भारत माँ की रक्षा करना
मेरी माँ ने मुझे सिखाया था ।

अपनी माँ के दूध का कर्ज मुझे चुकाना है ।
अपनी माँ के लिये ही नही,
अपनी भारत माँ के लिये भी,
एक दिन वीर योद्धा मुझे कहलाना है ।

बाबुल की बेटी

बाबुल, मैं तुम्हारी गुड़िया,
क्यों नाराज नाराज मुझसे रहते हो;
हूँ, मैं लड़की इसीलिये बाबुल,
तुम मुझसे रूठे-रूठे रहते हो।

कैसे बाबुल तुम भूल गये मैं लड़की हूँ,
लेकिन लड़कों से कम ना कहलाऊंगी;
इक दिन ऐसा आएगा बाबुल,
मैं भी आपका नाम रौशन कर जाऊँगी।

बाबुल देखो कितने सपने,
लड़की ही पूरा करती है।
कभी नजर राजनीति में आती है।
तो कभी वायुमंडल में देखो बाबुल,
लड़की हवाई जहाज चलाती है।

लड़की हूँ मैं बाबुल लेकिन,
संसार की गृहस्थी को चलाना
माँ ने मुझे सिखाया है।
सुख और दुख हो तो पहलुओं में खुश रहना,
मुझे मेरी माँ ने सिखाया है।

बाबुल मैं हूँ लाड़ली गुड़िया,
क्यों रूठे-रूठे रहते हो;
हूँ मैं, लड़की बाबुल इसीलिये तुम
मुझसे क्यों नाराज रहते हो ?

जिंदगी का क्या भरोसा ?

माँ का लाल देखो तोता बनकर उड़ गया ।
बेटा माँ से कह कर जाता,
माँ मुझको दफ्तर अभी ही जाना है ।
शाम को लौट कर आऊँगा,
तो, मैं तुझे बस से मंदिर के दर्शन कराऊँगा ।
राह निहारे माँ उसकी, बेटा मेरा आएगा,
संग में उसके जाऊँगी मैं मंदिर मुझे वो ले जाएगा;
बेटा ना आया, शाम को लाश बेटे की आई थी,
जिस बस से घूमाने का वादा कर रहा था बेटा;
उस बस के नीचे कुचलकर उसकी मौत ही जानो आई थी ।
माँ का बेटा देखो मंदिर जाने का वादा करता,
पर भगवान के घर में चला गया ।
माँ का बेटा देखो तोता बन कर उड़ गया ।
असुवन की धारा है बहती,
माँ भगवान से प्रश्न है करती;
मेरा लाल तो वादा मुझसे यही करके गया था
कि मंदिर मुझे ले जाएगा,
पर मंदिर के भगवान से पूछे माता;
वह तेरे दर पर मुझे छोड़कर कैसे चला गया?
मां का बेटा चला गया देखो, तोता मेरा उड़ गया ।
बुढ़ापे का सहारा मेरा चला गया ।
मेरा लाल, मुझे मंदिर का वादा कर
तेरे दर पर देखो चला गया,
माँ का तोता उड़ गया ।

जीवन की गाड़ी चलती जाती...

जीवन की गाडी चलती जाती...
पाठ हमें पढ़ाती है,
सुख हो या दुख हो,
हमको चलते चलते जाना है ।

राह में मिलेंगे कितने भी पत्थर,
पर हम को आगे बढते जाना है ।
कठिनाइयाँ हमें पढ़ाती हैं,
हर मुश्किल को पार करके हमें
खुदकी राह बनानी है ।
जीवन की गाड़ी चलती जाती...

सुख और दुख जीवन में
इंसान के आते-जाते हैं,
दुख भी कुछ नया पाठ पढ़ाये,
सुख की शीतल छाया
अनुभव नया पढ़ाती है ।
जीवन की गाड़ी चलती जाती...

हर कठिनाई में तो ये
हमे नई सीख ही दे जाती है
अंसुवन की धारा भी जानो हमें
कुछ सीख जरूर दे जाती है,

खुशियों का मतलब भी जानो
नया पाठ पढ़ा ही जाती है.
जीवन की गाड़ी चलती जाती...
नया पाठ हमें पढ़ा ही जाती है ।

कठिनाईयाँ न आये जीवन में
तो जीवन का मतलब क्या होगा?
हर चुनौती को पार करने का,
जज्बा हममें कैसे होगा ?
सुख की शीतलता ना हो जीवन में,
तो दुख का अनुभव कैसा है ।
यह एहसास हमें कैसा होगा?

सुख-दुख की गाड़ी ही बनाकर,
जीवनका सही मतलब हमें सिखाया है,
जीवन की चुनौती को पार करते-करते,
जीवन में सही रंग भरकर ही तो
हमें जिंदगी का मतलब सिखाया है ।
जीवन की गाड़ी चलती जाती...

हर कठिनाइयाँ हमे
कुछ सीख नयी दे जाती हैं ।
सुख की शीतलता भी हमको
अनुभव नया पढ़ाती है
जीवन की गाड़ी चलती जाती....

माँ की ममता

माँ की ममता का तुमको महत्व आज बताऊँ,
उसके अनमोल प्यार की कीमत कैसे लगाऊँ?

जिस माँ की बेटी दिव्यांग हो जाती है,
वह अपने माँ की चिंता का सबसे बड़ा कारण बन जाती है ।

कॉलेज में बेटी जाती, माँ चिंतित हो जाती है,
सही सलामत मेरी लाड़ली क्या घरको आ पाएगी।

बार-बार घड़ी को देखे,
दरवाजे पर मेरा चेहरा ढूँढा करती है;
सही सलामत मेरी लाड़ली क्या घर को आ पाती है?

लोगों की बुरी नजरों से क्या मेरी लाड़ली बच पाती है,
सही सलामत मेरी लाड़ली क्या घर को आ पाती है?

माँ की ममता का तुमको महत्व आज बताऊँ,
उसके अनमोल प्यार की कीमत कैसे लगाऊँ?

आईना – एक हकीकत

'यू कॅम पर्फेक्ट', में फोटो बना बनाकर काले को गोरा बनाया करते हो?
इस झूठ के साथ मेरा परिचय सारे दोस्तो से कराया करते हो ।

साँझ की मै बेला हूँ, साँझ की मै बेला हूँ,
साँझ का परिचय रौशनी कहके कराया करते हो;
साँझ ने जब झूठ पाया, अपना कदम पीछे की तरफ बढ़ाया;
साँझ ने जब पाया कि रोशनी ने साँझ का परिचय साँझ कहकर कराया,
तभी तो इस साँझने खुशी-खुशी अपना कदम बढ़ाया।

'यु कॅम पर्फेक्ट', में फोटो बना बनाकर काले को गोरा बनाया करते हो?
इस झूठ के साथ मेरा परिचय सारे दोस्तो से कराया करते हो।

ना होती मैं साँझ, तो रोशनी से विपरीत मैं तुमको कैसे बताती?
ना बनती मैं बादल, तो आसमान की चमक को मैं कैसा जताती?
ना बनती मैं काजल, तुम हसीनाओं के आँखो की शोभा मैं कैसे बढाती?
ना बनती मैं काँटा, फूलों के नर्म एहसास को मैं कैसे जताती?
काला-गोरा, धूप और छाँव, फूल और काँटे यही जिंदगी होती है;
इन्हीं दोनों पहलुओं से तो संसार की रचना होती है।

'यू कॅम पर्फेक्ट', में फोटो बना बनाकर काले को गोरा बनाया करते हो;
इस झूठ के साथ मेरा परिचय सारे दोस्तों से कराया करते हो।

मेरा बचपन

माँ मेरे बचपन के साथ तेरी यादें जुडी हैं,
माँ मेरा बचपन देखो आज तेरी बातें याद कराता है;
बचपनमें मैं छोटी-सी गुडिया,
कैसी कैसी हरकत करती ये तेरी बातें याद कराती है;
मासुमियत में भी माँ तू मेरा ध्यान रख जाती है,
गिरती पडती जब भी माँ मैं तेरी आँखे नम हो जाती हैं ।

हँसी किल-किलारी में भी माँ मैं तेरी बातों की
उस फिक्र को याद करती हूँ,
नटखट हरकत जब मैं करती हूँ,
हर हरकत में भी माँ तेरी फिक्र को याद करती हूँ;
कभी रुठना और कभी मनाना, अपनी बातों-से मुझे समझाना,
रुठ भी मैं जाऊँ तो खिलौने दे देकर बातोंसे मुझे मनाना;
माँ कैसे मैं भूल ही जाऊँ, सबसे जादा फिक्र मेरी माँ मुझे जताती है,
गर्भ में नौ महीने माँ ने पाला उस प्यार की कीमत
मेरी माँ मुझे एहसास कराती है ।

गम मेरा ही माँ सबसे ज्यादा, सबसे ज्यादा खुशी तुझे ही होती है,
गिरती जब भी हूँ माँ तो तकलीफ तुझे ही ज्यादा होती है,
आँखें नम हो जाती हैं ।
माँ मेरा बचपन कितना प्यारा, वो बचपन याद कराता है;
हर किसी के प्यार में भी तेरा प्यार नौ महीनों से ज्यादा होता है ।

माँ की ममता वो आँचल है जो हरदम शीतल एहसास मुझे कराती है,
अपने बचपन की सारी खुशियाँ माँ की बातें ही तो मुझे जताती हैं;
कैसी-कैसी हरकत करती उस नन्ही सी गुड़िया के रुप में,
मेरी माँ की बातें मुझे याद कराती है;
अपनी परछाई के रुप में देखो,
वो अपने बचपन का दर्शन मुझे कराती है ।

सबसे प्यारी मेरी आँखें

सभी अंगों में सुंदर आँखें, सबसे प्यारी मेरी आँखें
दर्पण में इसे निहारा करती हूँ, सबसे प्यारी मेरी आँखें

आँखों को अपने सजाती हूँ;
कभी मस्करा और कभी काजल लगाकर,
इसकी खूबसूरती को दुगुना बनाती हूँ ।

आँखे मेरी प्यारी है जिसने रंग रुप के दर्शन मुझे कराये थे
फूल पत्तियाँ, पेड़ पौधे, चहचहाते पंछी,आभास मुझे कराये थे;
चंचल थी ये मेरी आँखे,
पलके झपक-झपककर जानो मुझे कुछ नया अनुभव कराती थी,
इशारों-इशारों में कभी बाते कर जाती थीं,
तो कभी गमका अनुभव मुझे आँसुओं के रूप में कराती थी ।

दादी मुझे समझाती है आँखोसेही प्यारी मन की ज्योती होती है,
मन की ज्योति से देख दुनिया सबसे प्यारी लगती है;
मन के ज्योति का दर्पण इन्सान के विचारों को साफ बताता है,
गुण, स्वभाव और संस्कार को देखकर ये सबसे दोस्ती कराता है;

तभी तो देखो मनके ज्योतीसे मैंने सुनहरी राह बनायी है,
अंधकार भरी दुनिया मे एक नई रौशनी की राह बनायी है;
सबसे प्यारी मेरी आँखे, पर मनकी ज्योति की आँखे भी होती है,
उन आँखोसे देखो तो इन्सान की जिंदगी में खुशियाँ भी दुगुनी
होती है।

ब्रेल लिपि

लुई ब्रेल की मैं ब्रेल लिपि हूँ, जो अंको में निखर कर आती हूँ,
छह टिंबीं की पाटी में देखो, मैं कितने शब्द सजाती हूँ।

एक अंक जब पाटी पर पड़ता अ मैं कहलाती हूँ,
दो अंक पाटी पर जब पड़ता ब मैं कहलाती हूँ;
हर अंको का मतलब मैं ब्रेल लिपि में कर जाती हूँ,
ब्रेल लिपि की पाटी में टक टक कर
अपने मन की भावनाओं को अभिव्यक्त कर जाती हूँ।

ब्रेल लिपि के माध्यम से ही तो मैं सबके समक्ष
अपनी भावनाओं को लेकर आती हूँ,
लुई ब्रेल की अक्षरों को मैं याद करके ही तो
कविताओं की रचना को शब्दों के अंदाज से
मैं सबके समक्ष रखती हूँ।

लुई ब्रेल की रचना ऐसी लगती जैसे
छह अंको की पाटी में समाकर आए थे
ब्रेल के अक्षर सफेद पन्नों पर
सफेद मोती के रूप में निखर कर आए थे

लुई ब्रेल लिपि आज कमाल ही कैसा कर गई,
हर कविताओं की रचनाओं को एक राह सुनहरी दे गई;
नमन करूं मैं जितना उनको मेरे शब्द कम पड़ जाते हैं,
अ आ ई तो क्या अं अः तक उनकी तारीफ में कम पड़ जाते हैं;

लुई ब्रेल ना होते तो ब्रेल लिपि की रचना कैसे हम कर पाते,
कैसे अपनी अभिव्यक्ति को हम सबके लिखकर ला पाते ।

अक्षरों की यह दुनिया बदल गई,
कागज कलम ना पास मेरे
ब्रेल लिपि में टंकलेखन पर आया है देखो मेरे पास में;
इसी टंकलेखन के माध्यम से देखो
कविताओं की रचना मैं तो करती हूँ,
लुई ब्रेल की लिपि को याद रख मैं
कविताओं की अभिव्यक्ति करती हूँ ।

आवाज का महत्त्व

मन की खूबसूरती आवाज बयाँ करती;
कानों में गुनगुनाहट होटों पर आ छलकती ।
मन की खूबसूरती आवाज बयाँ करती;
टुकुर-टूकुर नजरों से मुझे देखा करती ।
मैं ना देख पाऊँ, उनके मन को साफ पढ़ती;
मन की खूबसूरती आवाज बयाँ करती ।

रिश्ता क्या हैं ख़ून का

सब कहते है रिश्ता देखो खून से ही बनता है,
पर कैसे ये सब भूल जाते हैं?
कि रिश्ता इन्सानियत का भी बनता है।
जिसने सहारा हमें दिया
डूबने से हमें बचाया है।
वो रिश्ता खून का नही,
वो इन्सानियत की नजर आया है।
दुनिया की इस भीड़ में
कौन अपना और कौन पराया है?
ये हमें कभी किसी ने न पढ़ाया है;
मुश्किल में जो काम आया,
उस इन्सान ने ही तो अपना बनकर
अपनों का साथ निभाया है;
रिश्ता कहते हैं, खून का
लेकिन रिश्ता अपनों-सा भी तो होता है।
जो हमारी अपनों जैसी फिक्र जताये,
वो रिश्ता खून के रिश्ते से भी पावन होता है;
जब गिरते और सम्भलते,
गिरते समय में जिन्होंने हाथ दोस्ती का
हमारी तरफ बढ़ाया है,
क्या वो रिश्ते खून से भी कीमती नजर न आते है?
रिश्ता जैसे खून का, इन्सानियत का भी होता है।
इसलिए इन्सानियत का रिश्ता
हर किसी के नजर में जगह बनाता है।

मन्न की व्यथा

जब भगवान से मैं प्रश्न करती हूँ,
भगवान मेरी आँखे क्यों ली,
अब उन अक्षरो को लिखने में आँख कहाँ से लाऊँ ।

जानो भगवान मुझसे कहते,
ना लेता तेरी आँखे, उन आँखो का दर्द कैसे बताती;
दिव्यांग की पीड़ा कविता के सुनहरे अक्षरों में कैसे सजाती ।

न लेता किसी की आँखे, हाथ और पैर,
इस दुनियाँ को इन अंगो की कीमत कैसे बताती;
हर होते है अंग कीमती मैं इस दुनिया को कैसे बताती ।

है कमजोर कदम ये, आज गिरते पड़ते लड़खड़ाते है,
पर खुदंही संभल जाते है;
गिरना पडना लड़खड़ाके संभलना,
यही जिंदगी होती है, इन्ही दोनों पहलूओं से,
संसार की रचना होती है ।

क्यों बनी मैं बेटी

क्यों बनी मैं बेटी माँ,
अब मुझ को डर ही लगता है;
इस दुनिया के भीड़ में माँ,
मुझ को डर ही लगता है ।

कैसी-कैसी निगाहें पड़ती है माँ
जब मै रास्ते से चलती हूँ
बुरी-बुरी ही बातें
मुझको देखकर जब की जाती है;
मेरा अस्तित्व माँ बेटी का,
मेरे बेटी के अस्तित्व को मैं कोसी जाती हूँ;
क्यों बनी मै बेटी
इस बात का प्रश्न भगवान से पूछा करती हूँ ।

माँ कभी तो डर मुझसे ही इतना लगता है
कोरा कागज जैसी जिंदगी है, मेरी मुझको लगती है ।
पर वासनाओं के भेड़ियों की नजर पड़ती तो,
जानो कोरा कागज का अस्तित्व चंद पलों का होगा
ऐसी किस्मत मेरी लगती है ।।

बाबुल की मै बेटी माँ, एक दिन मेरा माही आएगा,
बाबुल सपना देख रहे-इक दिन डोली में बिठाकर ले जाएगा;
पर बुरी निगाहें पडती माँ मुझ पर मै कैसे तुझे बताऊँ,
अपनी बाबुल की चिंताओं को मैं कैसे कम कर पाऊँ?

माँ, अस्तित्व बेटी का मेरा,
मुझको ही भारी पड़ गया;
दुनिया के इस वासनाओं की भीड़ में,
माँ, क्या मेरा अस्तित्व धूल गया?

बेटी तो वो होती है
जो संसार की नींव तक जाती है,
गृहस्थी को आगे ले जाती है;
वो गृहिणी बनकर ही,
अपनी जिम्मेदारी भली भाँति निभाती है;
पर लोगो की नजरें बुरी ही मुझपर पड़ती हैं,
बेटी का अस्तित्व मेरा,
क्यों मेरे अस्तित्व को शर्मिन्दा करती हैं।

माँ, अगर शिकार हो जाऊँ
किसी की बुरी नजरों का,
तो मैं साँसे कैसी लूँ जिंदगी में,
मैं हर पल सोचा करती हूँ;
हर दम घुटती जाती हूँ,
मैं पलपल मरती जाती हूँ।

अस्तित्व मेरा बेटी का,
मैं बेटी के अस्तित्व को कोसा करती हूँ;
क्यों बनी मैं बेटी माँ,
ये प्रश्न भगवान से पूछा करती हूँ।

आसमान

आसमान ही एक बार जानो प्रश्न ये करता है,
सूरज जब भी आता है,
मैं अपना अस्तित्व छुपाकर जानो गुम हो जाता हूँ ;
जब सूरज ढल जाता है, मैं अपना रंग जमाता हूँ ।

अंधकार की छाया में चाँद के दर्शन तुम्हें कराता हूँ ,
टिमटिमाते तारों का अनुभव मैं
अंधकार की छटा से ही तो कर पाता हूँ;
अस्तित्व अंधकार का यह किसी ने कभी ना जाना था,
चांद की जगमगाहट, तारों के टिमटिमाहट का
अस्तित्व सबने माना था ।

मैं तो वही अंधकार के घेरे में हरदम रहता हूँ ,
पर सारे अनुभव लेकर मैं चूप ही रह जाता हूँ ;
अंधकार का घेरा इतना गहरा,
जो हर बार रंग का वर्णन करता हूँ ,
पर काला रंग अस्तित्व मेरा,
मै तो नए-नए रूप में उभरता जाता हूँ ।

कभी काजल बन जाता हूँ तो
आँखों की शोभा बढ़ाता हूँ,
पलको पर मस्करा बन लग जाता हूँ तो
पलकों की शोभा दुगुनी बनाता हूँ;

माथे पर काजल का टीका लग जाऊँ तो
बुरी नजरों से सभी को बचाता हूँ,
आंखों मे कजरा बनाकर छा जाऊं तो
नयनो की खूबसूरती को मैं बढ़ाता हूँ।

अंधकार भरा ये रास्ता, न अंधकार का जाल मैं बिछाता,
तो चाँद और तारों की पहचान मैं कैसे कराता
न अपना अस्तित्त्व बिछाता तो सही में,
काले रंग की कीमत मैं कैसे सभी को अनुभव कराता?

लाल हरा और नीला पीला रंग सबके मन को भाता हैं,
पर काला रंग ही हर किसी की नज़रों में चुभता जाता है;
काले रंग का घेरा था ये,
जिसने नज़रों की खूबसूरती को साफ बताया था,
नए रंग में नए रूपमें, काला रंग ही निखरकर आया था।

आसमान में जब अंधकार की छटा बनाकर सज जाता है,
तो अंधकार नहीं, चाँद और तारों का ही रूप निखरकर आता है;
पर अंधकार चुपचाप इन सब बातों को अनुभव करता है,
अपने शब्दों को मानो, अंदर ही अंदर सहम-सहम कर रखता है।

राजनीति का दौर चला

राजनीति का दौर चला
अभी चुनाव आनेवाला है,
राजनीति के नेता अभी, घरतक हमारे आयेगें,
हाथ जोड़ कर वो गरीबों का
कीमती वोट ले जायेंगे ।
राजनीति का दौर चला
अभी चुनाव आनेवाला है,
कितनी सुविधा ये राजनीति के
नेता हमें दे जाएँगे ?
हमारी बहुत सी मदद कर के
ये 'अच्छा नागरिक' अपने आप को बनायेंगे;
जनता की नजरों में ये चन्द पलों के लिये ही,
'सभ्य संस्कारी नेता' ही कहलायेगे,
गरीबों के काम ही आयेंगे,
अच्छाई का मुखौटा लगाकर;
ये जनता का कीमती वोट ले जायेंगे ।।

राजनीति का दौर चला
अभी चुनाव आनेवाला है ।
राजनीति के नेता अभी,
हाथ जोड़ कर आयेंगे;
गरीबों का वो कीमती वोट,
माँगकर के जायेंगे ।
कैसे ये भूल गये?
राजनीति के दौर में
तुमको हरदम-कदम बढ़ाना है,

अपने कार्यों से ही तुमको चन्द पलों के लिये ही नही,
हरदम जनता की मदद के लिये आगे कदम बढ़ाना है ।
मुखौटे लगाकर राजनीति के नेता,
गरीबों की मदद कर जायेंगे;
चुनाव जैसे चला गया.
तो ये अपना मुँह न दिखायेंगे
कबतक राजनीति इस तरह ही
सत्ता पर अपना हुकूम बनायेगी ?
नकली चेहरा लगा लगाकर भोली भाली जनता का,
कब तक विश्वासघात कर पायेंगी?
राजनीति का दौर चला
चुनाव आनेवाला है।
राजनीति के नेता हाथ जोड़ जोड़ कर
गरीब का कीमती 'वोट' ले जाएँगे।
अपने चेहरे पर मुखौटा लगाकर ये,
भोली-भाली जनता को,
अपनी बातों से खूब बहलायेंगे।
सारी सुविधा देकर ये हमको
'अच्छा नेता' भारत का
खुद को साबित जरूर कर जायेगे।
राजनीति का दौर चला,
चुनाव आनेवाला है,
राजनीति का नेता देखो, घर घर आनेवाला है।
अपनी बातों से वो गरीबों का
मन जीत ले जानेवाला है।
कीमती 'वोट' ले जानेवाला है।
राजनीति का दौर चला,
चुनाव ही आनेवाला है।

संविधान

संविधान की किताब मैं पढ़ती हूँ,
समान अधिकार सोच-सोच खुश हो जाती हूँ;
फिर भगवान से शिकायत करती हूँ;
तेरी दुनिया में भगवान,
समान अधिकार न दिए लोगों को?

भविष्य के वकीलों की कतार लगी है,
मैं गुनहगार बनकर कटघरे में खड़ी नजर आई;
सब आँखों से देखकर पढ़ते भगवान,
मैं कानों से सुनती, पढ़ती भी नजर आई ।

सोचा न था पहला मुकदमा,
अपने आपके लिये ही लड़ना होगा ।
अपनी कमजोरी के संग आगे मुझें ही बढ़ना होगा;
जैसे जिंदगी दी है भगवान आगे बढ़कर तुझे दिखाऊँगी,
आँखों से देखकर नही, कानों से भी सुनकर, पढ़कर,
आगे बढ़कर तुझे दिखाऊँगी !

संविधानकी किताब में पढ़ती हूँ,
समान अधिकार सोच सोच खुश हो जाती हूँ;
फिर भगवान से शिकायत करती हूँ,
तेरी दुनिया में भगवन
समान अधिकार न दिए लोगों को?

बेटा और बेटी

बेटा और बेटी में करती हूँ तुलना तुम्हे बताऊँ
पैदा होती है जब बेटी, मैं क्यों शोक मनाऊँ?
बेटी की कुर्बानीका महत्व तुम्हे समझाऊँ ।

त्याग किया बेटी ने इस परिवार छोड़ा -
बेटी ने दूजे परिवार को अपनाया
फिर भी ऊंचा स्थान हमेशा बेटों ने ही पाया ।

बाबुल हुए बीमार, ससुराल से दौड़कर आई,
आँखो में भर भर आँसुओ की सौगात लेकर आई;
बीमार पिता को देखकर बेटे ने मुँह फेर लिया,
ममता का हाथ आखिर उसी बेटी ने ही बढ़ाया ।

संस्कार थे ये माँ के दूजे परिवार को अपनाया,
अपने कर्तव्योंको उसने भली-भाँति निभाया;
वंश की बुनियाद थी बेटी, उसने ही तो वंश बढ़ाया,
फिर भी ऊंचा स्थान हमेशा बेटों ने ही है क्यों पाया?

आत्मा मेरी भटक रही है ।

आत्मा मेरी भटक रही है माँ
मुझको न्याय दिला दे;
बलात्कार किया माँ जिसने मेरा
उसको सजा दिला दे ।

तड़प रही थी, माँ मै तब
जब शैतानों ने हमला बोला;
जिस्म को मेरे, माँ नोंच-नोंच कर
जानो, ऊन भेड़ियों ने, घायल मुझे कर डाला था,
मेरी आत्मा को जानो, उन्होंने नोंच नोंचकर खाया था
आत्मा मेरी भटक रही है माँ मुझको न्याय दिला दे ।

माँ मै तो वही मर गयी, लेकिन आत्मा मेरी भटक रही है;
मुझको न्याय दिला दे माँ जिन्होने मेरा बलात्कार किया
सजा उन्हें दिला दे ।

माँ कितने प्रश्न जानो लोग तुझसे करते है (२)
मेरे चरित्र को लेकर, माँ कितनी-कितनी बातें करते है
मै तो माँ, भटक रही, आत्मा बनकर दुनिया में ।
पर कैसे सफाई दूँ मैं माँ मै सोच सोचकर तड़पती हूँ ।

इस दुनिया की बातों से जो तकलीफ तुझको दी जाती है,
उन प्रश्नों के उत्तर कैसे दूँ, ये आत्मा मेरी कहती है ।

माँ, जिन्होने मुझे आज इस दुनिया में पहुँचाया है;
अस्तित्व ना रहा कही मेरा, आत्मा मुझे बनाया है।
माँ, न्याय मुझे दिला दे, मेरे अपराधियों को सजा दिला दे।

माँ देख मुझे, तेरी गुडिया,
कैसी भटक रही वीरानों में
माँ न्याय मुझे दिला दे।

बेटी हूँ ना, मै तेरी माँ, मेरी पिड़ा तू ही जाने;
इस दुनिया के भीड़ में माँ, तू ही तो मेरी अपनी है।

अपनी व्यथा तुझे बताऊँ, अपनी सारी पीड़ा माँ;
मै रो-रो कर तुझे सुनाऊँ, न्याय मुझे दिला दे माँ।
मेरे अपराधियों को सज़ा तू दिला दे।

इंसान के दो रूप

इंसान के दो रूप देखो एक चेहरा ही बयाँ करता हैं,
आँख नाक और शक्ल की मनमोहक सूरत बयाँ करता है ।
मनमोहक हो सूरत जिसकी, आकर्षित लोग हो जाते हैं
उसकी सुंदर छवि देखकर जानो लोग मोहित हो जाते हैं
पर कैसे लोग यह भूल जाते हैं ।
अंतर मन का दर्पण देखकर जब इंसान कदम बढ़ाता है,
उसके गुणों की छवि देख कर वह कभी ना धोखा खाता है ।

इंसान के गुणों का दर्पण सूरत से भी ज्यादा सीरत ही बयाँ करता है,
इन्सान का मन विचारों की सुंदरता बयान करता है ।
आंखों से इंसान देखा जाए, हरदम धोखा खाता है,
मन से समझा जाए इंसान को तो आईना साफ नजर आता है ।
पर सूरत देखकर ही इंसान क्यों मनमोहित हो जाता है,
गुणों के दर्पण को देख देख कर क्यों नहीं हर मुश्किल से बच ता जाता है ।

गुणों का दर्पण इतना मोहक, लेकिन,
सूरत वक्त के साथ ढलती जाती है ।
पर मन का दर्पण हरदम नए रूप में निखर आता है ।
इंसान दुनिया से चला ही जाता है,
पर मन के दर्पण के गुणों को सब की नजरों में छोड़ जाता है ।

आँसुओं नम आँखों से उसके गुणों के दर्पण की छबि देखी जाती है
सूरत की छबि ढलती ढलती जाती, इक दिन माटी में मिल जाती है ।

आँखों से देखी जाये वो सूरत ढलते सूरज का रूप बयाँ करता है
गुणों का दर्पण सबसे प्यारा अन्तर्मन को बयां करती है ।

किन्नर

एक किन्नर की व्यथा तुम्हे मैं बताऊँ
उसकी दुआ भरी वाणी का महत्व तुम्हें मैं समझाऊँ।

होती है जब किन्नर, पूछे वो भगवान से
क्यों ना बनी मैं लड़का, लड़की
क्यों ना थे मेरे माँ और बाबूल
शरीर से बनी मैं गाली
होठ़ो से बनी दुआँ की वाणी।

एक किन्नर की व्यथा तुम्हे मैं बताऊँ
उसकी दुआ भरी वाणी का महत्व तुम्हें मैं समझाऊँ।

काश होते मेरे बाबुल जिसकी बनूं में लाड़ली बिटीयाँ,
काश होती मेरी मैय्या, जिसकी बनूं में लाड़ली गुड़ियाँ,
काश होते मेरे भैय्या, जिसके हाथों में बाँधू मै रेशम की लड़ियाँ
काश होती मेरी बहना, जिस संग खेलूं खेल, खिलौने गुड़ियाँ

दिन में ताली बजा बजाकर पैसे मैंने मांगे,
रात में सारी घुटन, आँसुओं में मैंने काटी।
शरीर से बनी मैं गाली, होठ़ो से बनी दुआँ की वाणी।

एक किन्नर की व्यथा तुम्हे मैं बताऊँ
उसकी दुआ भरी वाणी का महत्व तुम्हें मैं समझाऊँ।

मेरी दोस्त सफेद छड़ी

मेरी दोस्त सफेद छड़ी
ये काम मेरी आती है ।
हाथ मेरे आ जाए तो ये राह मुझे दिखाती है ।
रास्ते पर जब चलती मै तो,
सफ़ेद छड़ी संग संग ही मेरे ही चलती है ।
जोर से वाहन आये तो, वह वाहन को थमाती है ।

रास्ते पर चलती मैं तो
सफ़ेद छड़ी आगे-आगे चलती है।
सफ़ेद छड़ी को देखकर
हर मुश्किल आसान हो जाती है।
सफ़ेद छड़ी ही देखो, मेरी दोस्त मेरे संग संग चलती है ।
कभी न रूठती मुझसे ये तो, संग मेरे ही रहती है ।
लगता जैसे सफ़ेद छड़ी ये,
जादू की छड़ी ही बन गई ।
जिस राहपर मै ही चलती जाती,
उस राहपर जाना मेरी ढाल ही बन गई ।
सफ़ेद छड़ी को देखकर मदद का हाथ
जल्दी-जल्दी आता है ।
हर रास्ते की भीड़ में जानो,
कोई साथी उभरकर आता है।
रास्ता पथरिला हो तो भी ये,
मुझे आभास कराती है।

गड्ढों से ये मुझे पहले ही सावधान।
सफ़ेद छड़ी कर जाती है ।
अच्छी है ये दोस्त मेरी जो,
सफ़ेद छड़ी नामक से जानी जाती है।
दिव्यांग की जिन्दगी में ये सफ़ेद छड़ी ।
मुख्य भूमिका निभाती है।
सफ़ेद छड़ी का जादू देखो कैसे चल गया।
भीड़ से भरे रास्ते में मदद का साथी मिल गया।
सफ़ेद छड़ी ही याद कराती ।
ये 'सिग्नल' तो ही मेरा है।
हर रास्ते पर वाहन थम जाये।
ये तो साथी मेरा प्यारा है।
ये साथी मेरा प्यारा है।

अपाहिज

इंसान अपाहिज नहीं, सोच अपाहिज है ।
जब किसी बात ने इंसान को कमजोर किया तो,
एहसान जताने वालों की कतार लंबी थी ।
नादान था, इन्सान भूल गया ।
इंसान अपाहिज नहीं, सोच अपाहिज है ।
मन की शक्ति को सोचे तो कम नही कोई है।

नदी सीख दिलाती है

नदियाँ की धारा है बहती, हर लहर तुम्हें याद दिलाती है,
जिंदगी में नहीं है रुकना, ये धारा हमें बताती है;
जिंदगी का सही मतलब आगे बढते जाना है,
जितनी भी कठिनाइयाँ आये,
डट कर सामना करते आगे चलते जाना है ।

नदियाँ की धारा ना रुकती, यह बहती हरदम जाती है,
राह में कितने मोड़ भी आये पर ये चलती जाती है;
जीवन का सही मतलब नदियाँ की धारा हमें बताती है,
कठिनाई आये जीवन में भी, ना रूकना हमको सिखाती है ।

नदियाँ की धारा ये कहती है, जिंदगी का मतलब आगे चलना है,
राह में आये कंकड़ पत्थर या कितने भी तूफान,
पर हमें शीतलता की राह बनाना है;
तरल स्वभाव की तरह हर परेशानी में हमें आगे बढते जाना है,
तरलता से जिंदगी की हर चुनौतियों को पार कर,
हमें नई राह बनाना है ।

मन की डोरी से रिश्तों में बाँधा

ना राखी की डोरी से बाँधा,
ना ही खून के रिश्तो से बाँधा था;
मन की भावनाओं से मैनें इन्सानों को इन्सानों से
इन्सानियत के रिश्ते में बाँधा था।

रास्ते पर चलती मैं तो, अजनबी साथ दे जाते थे
अपना बनकर वो जानो, मेरी फिक्र जताते थे।

ना राखी के डोरी से, ना खून के रिश्ते से मैने बाँधा था,
शब्दों की गहराई को, मन की भावनाओं को
मैने कविता के शब्दों में बाँधा था।

मुश्किल जब भी पड़ती मुझ पर,
अपने नहीं, पराये साथ दे, जाते थे,
हर मुश्किल से मुझे बाहर वो निकालते थे।
ये अपने नहीं, पराये रिश्ते ही काम आते थे।

ना मन की डोरी से मैनें शब्दों की डोरी से बांधा था;
हर रिश्तें का अनुभव लेकर ही
मैनें सुनहरी कविता के अंदाज में ढाला था।

कोरोना का आतंक

चीन के षडयंत्र से ही कोरोना विश्व में आया था,
आतंक से भी ज्यादा आतंक कोरोना ने फैलाया था ।

किसी के मांग का सिंदूर है छीना बेटे को पिता से छीना था,
कितने बच्चे अनाथ हुए कोरोना विश्व में आया था;
चीन के षडयंत्र से ही कोरोना विश्व में आया था;
आतंक से भी ज्यादा आतंक कोरोना ने फैलाया था ।

अब कारखाने की चिमनी धुआँ न उगले अब मंदी चढ़ी बाजारों में;
अब घर में चूल्हे ना जले पर आग लगी शमशानों में;
चीन के षडयंत्र से ही कोरोना विश्व में आया था;
आतंक से भी ज्यादा आतंक कोरोना ने फैलाया था ।

नई नवेली दुल्हन कितने सपने लेकर आई थी;
अच्छे संस्कारों से ससुराल की बगिया को महकायें
वह तो आशाएँ लेकर आई थी;
कोरोना इसमें नजर लगाए नई नवेली दुल्हन
सफेद लिबास में नजर ही आई थी;
हाथों की चुड़ियाँ टूट गई जब कि मेहंदी
हाथों की फीकी ना हो पाई थी;
चीन के षडयंत्र से ही कोरोना विश्व में आया था;
आतंक से भी ज्यादा आतंक कोरोना ने फैलाया था ।

जिस पिता ने बेटे को उंगली पकड़कर चलना सिखाया था,
बुढ़ापे का बनेगा सहारा अपना पेट काटकर बड़ा इंसान उसे बनाया था;
कोरोना उस में नजर लगाए बेटा पिता का सहारा ना बन पाया था,

अंतिम समय में पिता अपने लाल की सूरत देख ना पाया था;
यूँ तो बेटा पिता को अग्नि देता, पर पिता ने बेटे की जलती चिता
दूर से देखी थी,
चीन के षडयंत्र से ही कोरोना विश्व में आया था;
आतंक से भी ज्यादा आतंक कोरोना ने फैलाया था।

खुशियाँ मची हैं घर में देखो नन्हा मेहमान आनेवाला है,
इस घर का कुलदीपक, देखो वारिस आनेवाला है;
सपने सारे सपने रह गए, घर का वारिस
माँ के कोख में ही चला गया,
किलकारी ना गूँजी घर में मातम देखो फैल गया;
चीन के षडयंत्र से ही कोरोना विश्व में आया था,
आतंक से भी ज्यादा आतंक कोरोना ने फैलाया था।

आशादीप

नवरात्री के उत्सव में, नव दिन ज्योत जगमगाती है।
निरंतर जलती हुई ज्योत, ये आभास हमें कराती हैं।
जीवन में सुख दुख आता जाता, पर हर परिस्थिति में हमे,
दीपो की तरह है जगमगाना, ये नवरात्री की ज्योत हमे बताती हैं।
इसीलिए तो जीवन में देखो, आशादीप के साथी आ गये।
आशादीप के फरिश्ते, कविताओं के शब्दों में छा गये।
सरस्वती बनकर जानो ऐसा लगता, नई राह हमे दिखाते हैं।
आशादीप की किरण को लेकर, ये आगे हमे बढ़ाते हैं।

परदेसी गए परदेस

परदेसी गए परदेस
चिड़िया के चहचहाहट ने
वो याद हमें करते हैं बताया;
हवा के झोंको ने छूकर हमको,
उनकी तड़प को साफ जताया।

सूरज की किरणों ने आकर,
कब लड़ते थे कब झगड़ते थे वो बताया;
वो रूठते थे, तो हम
उन्हें मनाते थे, यह याद दिलाया।

चाँद की शीतलता ने
चांदनी की टिमटिमाहट ने
वो सपनो में करते है
हमें याद यह बताया।

ये यादें ऐसी होती हैं,
चेहरे पर खुशियाँ लेकर आती हैं;
यादें ऐसी भी होती हैं,
अंसुवन के मोती भी बन जाते हैं।

परदेसी गए परदेस -
चिड़िया के चहचहाहट ने,
वो याद हमें करते हैं बताया;
हवा के झोंको ने छूकर हमको,
उनकी तड़प को साफ जताया।

ना मैं भगवन सर का ताज तेरे

ना मैं भगवन सर का ताज, तेरे न गर्व घमंड की छाया हूँ।

गर्व घमंड तो भगवन, भगवन का भी टिक ना पाया था,
मैं तो इंसान हूं भगवन, क्या गर्व घमंड कर सर का ताज तेरे
बन पाऊँगी ?

ना मैं दायाँ बायाँ हाथ ही भगवन मैं चरणों की धूल हूँ।
चरणों की धूल ही बन कर भगवन मुझको रहना है।
तेरी छत्रछाया में भगवन, मुझको उस शीतल छाया में रहना है।

पावन सोच ही भगवन दे जा।
इंसानों के बीच में इंसान बनने की प्रेरणा मुझको भगवन दे जा,
इस दुनिया की भीड़ में भगवन न गर्व घमंड़ की छाया बनूँ मैं,
मैं तो तिनका इंसानियत का, इंसानियत का पाठ पढ़ूं मैं।

पुष्प न बनना है मुझको, मुझको धरती की माटी बनना,
मुझको ना हीं पर्वत बनना मुझको धरती की पावन धारा बनना,
गर्व घमंड न बनना मुझको मुझको चरणों की धूल है बनना।

चरणों की मैं धूल गुरुवर, चरणों में आपके रहने दो,
अपनी कृपादृष्टि भगवन, मुझ गरीब पर भी रहने दो।

क्यों न लगे मुझे सपने अपने

माँ मेरे प्रश्नों का उत्तर जरा दिला दे, देखे जो भी हैं सपने मैंने,
उनके धुँधले होने का मतलब मुझे बता दे;
रात में जब भी गहरी नींद में मैं सो जाती हूँ,
सपनों में परियाँ आतीं, मुझे स्वर्ग की सैर कराती हैं,
आंखें खुलते ही मेरे सपने सारे ओझल हो जाते हैं,
देखे रातों में जो सपने, वो सपने अपने नजर नही आते हैं।

रात को जब मैं सपना देखूँ, तो डॉक्टर, नर्स बनकर,
माँ मैं गरीबों की सेवा करती नजर आती हूँ;
हर मरीज का इलाज कर खुशियाँ देखूँ दूजे दिन,
जब मैं उनके चेहरे पर, तो खुश हो जाती हूँ।

दूसरे दिन सपना देखूँ तो टीचर बनकर
मैं शिक्षा का पाठ पढ़ाती हूँ,
सभी के दिमाग में ज्ञान की रौशनी देकर जाती हूँ।
तीसरे दिन जब मैं सपना देखूं माँ,
लोगों की भीड़ में मैं दौड़ती दौड़ती ही नजर आती हूँ,
भीड़ जानो कहाँ ले जाती मैं, वो रास्ता ढूंढ न पाती हूँ।

माँ मेरे ये सारे सपने सुबह की रोशनी में अधूरे रह गये,
माँ ये सपने ऐसे लगते की आंखों से ओझल ही हो गये।

माँ मुझे इतना ही बता दे,
दुनिया की इस भीड़ में दी जाती है, जो शिक्षा हमें,
क्या वो शिक्षा ओझल हो पाती है?

ज्ञान जो हम हासिल करते हैं,
क्या वो किताबों का ज्ञान, धुंधला हो जाता है?
अच्छे संस्कारों की सीख भी माँ
क्या सपनों की तरह ओझल हो जाती है?

माँ ये सारे सपने जानो रात में देखे मैने जो,
क्या वो ओझल एक दिन हो जायेंगे?
माँ मेरे ये सपने सारे क्या कभी पूरे हो पायेंगें ?
लेकिन सपने ना देखूँ तो माँ जिंदगी में आगे कैसे बढ़ पाऊंगी ?
हर सपने के मतलब को मैं कैसे जान भी पाऊंगी?

आगे बढ़ने का सपना ही माँ मैनें हरदम देखा है
इसीलिए तो किताबों की दुनिया में मैंने अपना अस्तित्व जमाया है
ना होते सपने मेरे माँ, क्या मैं आगे बढ़ पाती?
सपनों को भूलकर मैं बड़ी-बड़ी उपाधि हासिल कर पाती?

सपने जो रात में देखे, वो धुँधले ही हो जायेंगे,
पर खुली आंखों से किताबों की दुनिया में,
ज्ञान की रोशनी में जो सपने देखे,
मेरे सपने पूरे हो जाएँगे। वो सपने पूरे हो जाएँगे !

बेटी

मां-पापा के घर में बेटी
चिड़िया बनकर आई,
लेकिन मैंने किस्मत क्यों नहीं,
चिड़िया जैसी पाई ?

चिड़िया के तो पंख थे,
सारे आकाश में वह उड़ जाती;
चहक चहक कर मन के अपने,
सारे भाव बताती ।

मैंने जब अपने पंख फैलाएँ,
उन पंखों की सीमा बाँधी जाती;
ससुराल से मायके तक की
बेड़ी पैरों में डाली जाती ।

मां-पापा के घर में बेटी
चिड़िया बनकर आई,
लेकिन मैंने किस्मत क्यों नहीं
चिड़िया जैसी पाई ?

यादें

सबसे प्यारी यादें, यारों सबसे प्यारी यादें

इंसान जब दुनिया में आया, अच्छी यादों के साथ,
परछाईं की तरह साथ थी, वह थी प्यारी यादें,
सबसे प्यारी यादें, यारों सबसे प्यारी यादें ।

यादों का यह सिलसिला, अंत तक चलता गया,
आँखों से आँसू बन छलकी वह थी प्यारी यादें,
सबसे प्यारी यादें, यारों सबसे प्यारी यादें ।

शब्द

मीठे बोल जो हमने बोले,
हँसी खुशी बन चेहरे पर छलके,
कड़वे जहर-बोल जो बोले,
बूँदे-बूँदे आँसू बन आँखों में छलके ।
कड़वे बोलों से घायल जिसे हमने किया,
हिम्मत और हौसला बनकर वो हाथ हमारे साथ था ।
पछतावा बडा हमको हुआ,
क्यों कड़वे बोल हमने बोले,
क्या ये वक्त का तकाजा था?
शब्दों की ताकत को जानो, शब्दों का महत्त्व पहचानो ।

गुण स्वभाव संस्कार

घमंड़ किया इन्सान ने ।
रूप-रंग धन-दौलत से ।
ना किया घमंड़ गुण स्वभाव संस्कारो से ।।
नादान इंन्सान भूल गया ।
रूप-रंग धन-दौलत मिट्टी बन गयी ।
गुण स्वभाव संस्कार ही ।
वो कीमती दौलत रह गई ।

बदतमीज

सभ्यता, सादगी, संस्कार... माँ, बाबूलने दिया;
लेकीन; लोगों की कडवी बातों ने असभ्य
बननेपर मजबूर किया ।

चूप रही मैं, जब कड़वी बाते आसू दे गई;
लेकीन असभ्य बनके जब मुँह खोला तो
मेरी एक नयी पहचान बन गयी,
वो थी 'बदतमीज' 'बदतमीज' 'बदतमीज' ।

वीर शहीद जवान

वीर शहीद जवान
अपने माँ के सपने में आकर कहता है
माँ तुने मुझे जन्म दिया ।
मैने तेरे दूध का कर्ज निभाया है ।।
अपनी भारत माँ की शान में ।
मैने अपना प्राण गँवाया है।
माँ मैने तेरे दूध का कर्ज निभाया है ।।

जिस बहना के हाथों में राखी बाँधी ।
उसकी रक्षा न कर पाया मैं ।
पर अपने भारत माँ के लिये।
अपने प्राणों की आहुति देकर।
वीर शहीद जवान कहलाया मै।

माँ, मेरी पत्नी अपने लाल को देखकर
उसमें मेरी छबी ही देखा करती है।
मेरे मुन्ने को मुझ जैसा वीर जवान बनाए।
वो तो यह सपना देखा करती है ।

माँ, शत्रु इस देश में कैसे घुस पायेगा
जब तुझ जैसी माँ अपने बेटे को वीर जवान बनाती है
अपने देश की रक्षा के लिये
वो अपने लाल को वीरता का पाठ पढ़ाती है ।

अपनी भारत माँ की शान में मैनें अपना प्राण गवायाँ है।
माँ, मैने तेरे दूध का कर्ज चुकाया है ।
धन्य है माँ तू तो, मै लाल तेरा कहलाता हूँ ।
गर्व है मुझे इस बात का माँ, मै तेरा प्यारा बेटा हूँ ।।

भारत माँ की मैं बेटी 'भारती'

भारत माँ की मैं बेटी 'भारती',
शब्दों की पुष्पमाला लेकर आई हूँ।
तुरंत कविता की सोच लेकर,
मैं आपके समक्ष आई हूँ।

पुष्प केसरी लाई हूँ,
वीरों पर अर्पण करती हूँ;
त्याग और बलिदान देकर
वीरों ने भारत की शान बढ़ाई थी।

खुद लाल रंग की चादर ओढ़ी
सफेद शांति की पुष्पों की राह
हमारे लिये बनाई थी।
खुद हरियाली हमकों देकर
रेगिस्तान की गोद अपनायी थी।

उज्ज्वल हो हमारा भविष्य।
विकास कर हम दुनिया में;
नीले अंबर की छाया देकर
अंधकार की गोद अपनायी थी।

इन शब्दों की पुष्पमाला,
मैं वीरों पर अर्पण करती हूँ;
जय हिंद जय भारती,
मैं भारत माँ की बेटी 'भारती' कहती हूँ।

प्रथम कविता प्रस्तुती

महिला दिन वक्तृत्व स्पर्धा २०२२

जागतिक अपंग दिन २०२२

उमंग के रंग २०२२

'अभिव्यक्तिचे काव्यलेणे' कविता प्रस्तुती २०२२

आशादीप केंद्राचे उपक्रम

आशादीप दिव्यांग पुनर्वसन केंद्र

- आर्थिक मदत : साधने, व्यावसायिक प्रशिक्षण, वाहन, भोजन, निवास खर्च इ.
- स्व. पद्मजा डोंगरे स्मृती शैक्षणिक सुविधा केंद्र : ऑडिओ बुक लायब्ररी, वाचन कट्टा, लेखनिक प्रकल्प
- व्यक्तिमत्व विकास केंद्र : व्यक्तिमत्व व कौशल्य विकास, प्रेरक व्याख्याने, स्पर्धा परीक्षेचे मार्गदर्शन
- प्रोत्साहन व प्रेरणा : स्व. उषा संत स्मृती पुरस्कार व दिव्यांग गुणवंत सत्कार
- क्रिडा : अंध महिला क्रिकेट चमूचे संघटन

आशादीप आरोग्य व पोषण केंद्र

- दिव्यांग आरोग्य शिबीर
- आहार जागर
- पोषक आहार उत्पादन केंद्र
- आहार सल्ला व मार्गदर्शन

उद्योग मंदिर

- कागदी व कापडी पिशव्या प्रशिक्षण व विक्री
- पेपर मॅशेच्या वस्तू - प्रशिक्षण व विक्री
- दिव्यांग उत्पादित वस्तूंची विक्री

आत्म दीपो भव!
आशादीप
संस्थापिका: स्व. उषाताई संत

आशादीप

अपंग, महिला-बाल विकास संस्था, नागपूर

स्थापना : ३ जुलै १९९३ • रजि. नं. महा/४१३/९३

प्लॉट नं. १, सिव्हिल लाईन्स, वेस्ट हायकोर्ट रोड, नागपूर-४४० ००१
चलभाष - ९८२३३ ६२१६१, ९४२१२ १२४४८
E-mail : pnslit@yahoo.com • Website : www.ashadeepsanstha.org.in
Youtube channel : ashadeepsanstha